• कविता...

अक्कड़–बक्कड़



अक्कड़-बक्कड़ बोकरी
बाबाजी की टोकरी ।
टोकरी से निकला बंदर
बंदर ने मारी किलकारी
किलकारी से हो गया शोर
शोर मचाते आ गए बच्चे
बच्चे सारे मन के कच्चे
कच्चे-कच्चे खा गए आम
आम के आम गुठली के दाम
दाम बढ़े हो गई महंगाई
महंगाई में पड़े न पार
पार करें हम कैसे नदिया
नदिया में नैया बेकार
बेकार भी हो गई पेटी
पेटी में ना पड़ते वोट
वोट मशीनों में है बटन
बटन दबाओ पड़ गए वोट
वोट से बन गए सारे नेता
नेता भी लगते अभिनेता
अभिनेता है मंच पे सारे
सारे मिलकर दिखाते खेल
खेल देखते हैं हम लोग
लोग करें सब अपनी-अपनी
अपनी डफली अपना राग
राग अलापें अजब-गजब हम
हम रहते नहीं रलमिल सारे
सारे मिलकर हो जाएं एक
एक-एक मिल बनेंगे ताकत
ताकत सफलता लाएगी
लाएगी खुशियां हर घर-घर
घर-घर दीप जलाएगी ।

■ दीनदयाल शर्मा

• चुटकुले...



टीचर : पिंकी, एक वाक्य में बताओ कि 'मेहनत' और 'किस्मत' में क्या फर्क है?
पिंकी : सर, जो बिना मेहनत के मिल जाए वो किस्मत, और जो किस्मत में ना होते हुए भी मिल जाए वो मेहनत!

मम्मी : गोलू, आज स्कूल में क्या पढ़ा?
गोलू : मम्मी, आज मैम ने बताया कि बंदर पेड़ पर कैसे चढ़ता है।
मम्मी : अच्छा? और तुझे समझ आया?
गोलू : हां मम्मी, पर मुझे ये समझ नहीं आया कि बंदर को स्कूल जाने की जरूरत क्यों नहीं पड़ती।

संता : यार बंता, कल रात मैंने सपना देखा कि मैं करोड़पति बन गया हूं।
बंता : फिर क्या हुआ?
संता : फिर अलार्म बज गया और मैं वापस 'खाली जेब' में आ गया!

• जानकारी...

इंसान के शरीर में कितनी नसें

मानव शरीर प्रकृति की सबसे जटिल और अद्भुत रचनाओं में से एक है, जिसके भीतर हर सेकंड करोड़ों जैविक क्रियाएं चलती रहती हैं। आम बोलचाल की भाषा में जब हम नसों की बात करते हैं, तो विज्ञान की दृष्टि से इसके दो मुख्य हिस्से होते हैं- पहला खून ले जाने वाली रक्त वाहिकाएं और दूसरा दिमाग से शरीर तक संदेश पहुंचाने वाली तंत्रिकाएं। चिकित्सा विज्ञान और एनाटॉमी के शोध बताते हैं कि हमारे शरीर के भीतर इन नसों का इतना विशाल और बारीक जाल बिछा हुआ है, जिसकी कुल लंबाई जानकर कोई भी दंग रह सकता है।



एक वयस्क इंसान के शरीर में खून के प्रवाह के लिए तीन तरह की मुख्य रक्त वाहिकाएं होती हैं, जिन्हें धमनियां, शिराएं और कोशिकाएं कहा जाता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ और विभिन्न मेडिकल शोधों के अनुसार, यदि एक औसत वयस्क व्यक्ति के शरीर की सभी रक्त वाहिकाओं को आपस में जोड़कर एक सीधी रेखा में बिछा दिया जाए, तो इनकी कुल लंबाई लगभग 96,000 से 1,00,000 किलोमीटर तक होती है।

यह दूरी इतनी अधिक है कि इससे पूरी पृथ्वी के चारों ओर दो से ढाई बार चक्कर लगाया जा सकता है। इस विशाल लंबाई का सबसे बड़ा हिस्सा सूक्ष्म कोशिकाओं का होता है, जो बाल से भी कई गुना पतली होती हैं और शरीर की हर कोशिका तक ऑक्सीजन व पोषक तत्व पहुंचाती हैं। एक नवजात शिशु में भी इन रक्त वाहिकाओं की कुल लंबाई करीब 6,000 किलोमीटर के आसपास होती है।

शरीर में कितनी होती हैं मुख्य रक्त वाहिकाएं और तंत्रिकाएं-शरीर में छोटी-बड़ी केशिकाओं की संख्या अरबों में होती है, इसलिए इनकी सटीक गिनती संभव नहीं है, लेकिन प्रमुख नसों की संख्या निश्चित होती है. यदि हम तंत्रिका तंत्र की मुख्य नसों की बात करें, तो इंसान के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से कुल 43 जोड़ी मुख्य तंत्रिकाएं निकलती हैं।

इनमें से 12 जोड़ी कपाल तंत्रिकाएं सीधे मस्तिष्क से जुड़ी होती हैं, जो देखने, सुनने, सूंघने और चेहरे की गतिविधियों को नियंत्रित करती हैं, जबकि 31 जोड़ी मेरु तंत्रिकाएं रीढ़ की हड्डी से निकलकर हाथ-पैर और शरीर के अन्य अंगों तक संदेश ले जाती हैं। इसके अलावा शरीर में लगभग 86 से 100 अरब न्यूरॉन्स मौजूद होते हैं।

दिमाग तक संदेश पहुंचाने वाली तंत्रिकाओं की लंबाई-रक्त वाहिकाओं के अलावा, शरीर में मौजूद परिधीय तंत्रिकाओं की कुल लंबाई भी कम चौंकाने वाली नहीं है। मेडिकल विशेषज्ञों और न्यूरोलॉजी अध्ययनों के मुताबिक, एक वयस्क मानव शरीर में फैली इन तंत्रिकाओं की कुल लंबाई लगभग 72 से 74 किलोमीटर होती है।

ये नसें बिजली के तारों की तरह काम करती हैं और किसी भी स्पर्श, दर्द या तापमान का संदेश पलक झपकते ही दिमाग तक पहुंचाती हैं। शरीर में सबसे लंबी अकेली तंत्रिका साइटिक नर्व होती है, जो पीठ के निचले हिस्से से शुरू होकर पैरों के तलवों तक जाती है।



• यहूदी कहानी

कड़वी मिठाई

अतजल ने सुना था–स्वर्ग में सब आराम करते हैं। वहाँ किसी को कोई काम नहीं करना पड़ता। इच्छा करते ही हर चीज मिल जाती है। बच्चों को स्कूल भी नहीं जाना पड़ता। फरिश्ते सारा काम करते हैं।

वह स्वर्ग की तुलना अपने घर से करता तो परेशान हो उठता। यहाँ तो माँ हर समय चिल्लाती रहती हैं। हर समय डाँट–फटकार सुननी पड़ती है। अतजल सोचता रहा, सोचता रहा। वह चाहता था कि किसी तरह स्वर्ग चला जाए। लेकिन उसे पता था, मनुष्य मरने के बाद ही स्वर्ग जा सकता है...

इस्राइल के एक छोटे से शहर में एक अमीर आदमी रहता था। उसका नाम था कादिश। कादिश का इकलौता बेटा था अतजल। देखने में सुंदर, पर स्वभाव से आलसी। स्वर्ग की कहानियाँ बहुत अच्छी लगती थीं उसे। वह हर एक से कहानियाँ सुनाने का आग्रह किया करता। हरदम कहानियों में खोया रहता था।

अतजल ने सुना था-स्वर्ग में सब आराम करते हैं। वहाँ किसी को कोई काम नहीं करना पड़ता। इच्छा करते ही हर चीज मिल जाती है। बच्चों को स्कूल भी नहीं जाना पड़ता। फरिश्ते सारा काम करते हैं। वह स्वर्ग की तुलना अपने घर से करता तो परेशान हो उठता। यहाँ तो माँ हर समय चिल्लाती रहती हैं। हर समय डाँट-फटकार सुननी पड़ती है।

अतजल सोचता रहा, सोचता रहा। वह चाहता था कि किसी तरह स्वर्ग चला जाए। लेकिन उसे पता था, मनुष्य मरने के बाद ही स्वर्ग जा सकता है। बस, उसने मरने की ठान ली।

वह चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट गया। जो भी उसे उठाने आता, उससे कह देता, ''मैं तो मर गया हूँ।'' और खाना-पीना छोड़ दिया। माँ बहुत दुखी हो गईं। उसे समझाया, पर वह बोला, ''माँ, तुम मुझसे कैसे बात कर रही हो? मैं तो मर चुका हूँ।''

उसकी बहकी-बहकी बातें सुनकर घरवाले बहुत दुखी हुए। माँ जैसे-तैसे करके उसे कुछ खिलातीं, पर अतजल दिन-प्रतिदिन कमजोर होता गया। कई हकीम-वैद्य आए, पर वे कुछ न कर सके। हर बात के जवाब में अतजल यही कहता, ''मैं तो मर चुका हूँ।''

अतजल की माताजी एवं पिताजी की चिंता का ठिकाना न रहा। वे इसी फिक्र में थे कि अपनी इकलौती संतान को कैसे बचाएँ? बच्चे ने बेवकूफी-भरी हठ ठान ली थी और मौत के दरवाजे पर जा पहुँचा था।

आखिर अतजल के पिता कादिश डॉ. योत्स के पास गए। उनका नाम बहुत मशहूर था। डॉ. योत्स ने सारी बात सुनने के बाद कहा, ''मैं उसका इलाज कर सकता हूँ। पर एक शर्त है। मैं जैसे कहूँगा, वैसा ही करना पड़ेगा।''

मरता क्या न करता, कादिश ने डॉ. योत्स की शर्त मान ली। बात बेटे का जीवन बचाने की जो थी। डॉ. योत्स कादिश के साथ आ गए। उन्होंने एक मकान के कमरे को सुंदर ढंग से सजाया। पलंग पर फूल बिखेर दिए। कई नौकर परियों के पंख लगाकर देवदूत बन गए। कमरे में दीवारों पर लिख दिया गया-'स्वर्गलोक'। इसके बाद डॉ. योत्स कादिश के साथ अतजल के कमरे में गए। उन्होंने कहा, ''अरे, यह बच्चा तो मर चुका है। इसे दफनाते क्यों नहीं!''

डॉ. योत्स की बात सुनकर अतजल खुशी से चहकने लगा। उसने कहा, ''मैं तो कब से यही कह रहा हूँ। दफनाने के बाद ही तो स्वर्ग जाता है आदमी।''

झूठमूठ की एक अरथी बनाई गई, फिर उसपर अतजल को लिटाकर सब कब्रिस्तान की ओर ले चले। इस बीच बेहोशी की दवा सूँघने से अतजल नींद में डूब गया। तब उसे विशेष रूप से सजाए गए कमरे में ले जाया गया।

जब अतजल की आँख खुली तो वह हैरानी से चारों ओर देखने लगा। दीवार पर लिखे शब्द पढ़कर वह बहुत ही खुश हुआ। समझ गया कि मरने के बाद वह सचमुच स्वर्ग में आ गया है। वहाँ न उसके माँ-बाप थे, न ही दोस्त। गली-मोहल्लेवाले भी दिखाई नहीं दे रहे थे।

थोड़ी देर बाद देवदूत की पोशाक में परी जैसे पंख लगाए एक नौकर वहाँ आया। उसने कहा, ''अतजल, स्वर्ग में तुम्हारा स्वागत है। मैं देवदूत हूँ।'

अब तो अतजल को पक्का विश्वास हो गया। उसने कहा, ''मुझे भूख लगी है।'' पलक झपकते ही नौकर बढ़िया-बढ़िया व्यंजनों से भरा थाल ले आया। ढेर सारी मिठाइयाँ थीं। अतजल ने छककर खाया और फिर सो गया।

-जारी

• रोचक...

सबसे महंगे मार्केट



अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर स्थित अपर फिफ्थ एवेन्यू ने फिर से दुनिया के सबसे महंगे रिटेल बाजार का ताज हासिल कर लिया है। यहां सालाना किराया 35 प्रतिशत बढ़कर 2,700 डॉलर प्रति वर्ग फुट तक पहुंच गया है। दूसरे नंबर पर ब्रिटेन के लंदन की न्यू बॉन्ड स्ट्रीट है, जहां का सालाना किराया 2,230 डॉलर प्रति वर्ग फुट दर्ज किया गया है। वहीं, तीसरे स्थान पर इटली के मिलान शहर का विया मोंटेनेपोलियोन बाजार है, जहां सालाना किराया 2,160 डॉलर प्रति वर्ग फुट है, खान मार्केट लगातार भारत का सबसे महंगा हाई-स्ट्रीट रिटेल बाजार बना हुआ है। यहां दुकानों के किराए में सालाना आधार पर 14 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। खान मार्केट में सालाना किराया 238 डॉलर प्रति वर्ग फुट यानी करीब 1,875 रुपये प्रति वर्ग फुट प्रति माह तक पहुंच गया है। बड़े घरेलू और विदेशी लग्जरी ब्रांड्स की बढ़ती मांग और सीमित जगह के कारण यहां किराया लगातार बढ़ रहा है।

• आइजोल...



भारत का यह बेहद अनुशासित और शांत शहर है आइजोल, जो पूर्वोत्तर के खूबसूरत राज्य मिजोरम की राजधानी है। पहाड़ियों की चोटी पर बसे होने और एक सड़क को दूसरी सड़क से जोड़ने के लिए बनी सीढ़ियों के कारण इसे 'स्टेयरकेस सिटी' भी कहा जाता है। आइजोल की संकरी और घुमावदार सड़कों पर जब ट्रैफिक की लंबी कतार लगती है, तो कोई भी चालक ओवरटेक करने या गलत लेन में घुसने की कोशिश नहीं करता। वाहन चालक तब तक शांति से अपनी बारी का इंतजार करते हैं, जब तक कि आगे वाला वाहन खुद आगे नहीं बढ़ जाता।